16

मंचन 'छह पूँछ का चूहा' कहानी का

*धर्मप्रकाश**

अभी कुछ समय पहले, कक्षा एक व दो के गणित विषय के शिक्षकों के साथ अपने अनुभव साझा करने के लिए एक वर्कशॉप करने की योजना बनाई जा रही थी। एक साथी ने सुझाव दिया कि क्यों न एक सत्र ऐसा भी रखा जाए, जिसमें गणित से संबंधित कहानियाँ, पात्र अभिनय या कविताओं को सुर में गाकर उसके भाव प्रस्तुत करना इत्यादि पर अपने अनुभव एक-दूसरे के साथ बाँटे। विचार अच्छा था। सभी ने हाँ कह दी।

वर्कशॉप के आयोजन में अभी विचारों की दौड़ जारी थी। प्रश्न चिन्हों के साथ क्या इस कहानी का मंचन करें? अध्यापकों को मज़ा आएगा? मंचन कक्षा में हो पाएगा? इस सोच-विचार के बीच में अचानक एक कक्षा का व उसमें अध्यापिका द्वारा की गई प्रस्तुति का स्मरण हुआ। कक्षा में हुआ अनुभव मानों विचारों में फिर से सजीव हो गया।

कुछ महीने पहले बहुत सारे प्राइमरी स्कूलों की कक्षाओं में जाने का व अध्यापकों की शिक्षण विधि इत्यादि को देखने का अवसर मिला। अध्यापकों की अपनी सुविधानुसार कोई भी विषय चुनने व शिक्षण के किसी भी तरीके (जिनको वे प्रभावी समझते थे) द्वारा कक्षा में कार्य करने की आज़ादी थी। यह सब इसलिए कि आप सबको 'मेरी स्कूल' जाने की वस्तुस्थिति समझ आ जाए। स्कूल ढूँढ़ना व स्कूल तक पहुँचना काफ़ी मेहनत वाला काम था। क्योंकि यह छोटा-सा स्कूल एक घनी आबादी वाली बस्ती में था। कक्षा में पहुँचने के बाद अध्यापिका ने कहा कि आज मैं छह पूँछ वाले चूहे की कहानी इन बच्चों को सुनाऊँगी। मैंने धीमें से पूछा— ''यह कहानी आपने कहाँ पढ़ी है?'' अध्यापिका ने बताया कि एकलव्य द्वारा प्रकाशित पुस्तक है, उसमें पढ़ी थी। उसमें तो सात पूँछ का चूहा था, पर मेरी कक्षा में चूहे की छह पूँछे हैं। आज इसी कहानी का मंचन करूँगी। अध्यापिका ने बच्चों को प्रोत्साहित करना शुरू किया ''क्या तुमने चूहा देखा है?'' कक्षा एक के बहुत सारे बच्चों ने चूहे से ही जुड़े हुए अपने अनुभवों को बताया। ''चूहा काला होता है'', ''नहीं ग्रे होता है''। उसके बाद अध्यापिका ने फिर पूछा ''चूहे की पूँछ कितनी होती है?'' ''जो चूहा तुमने देखा था उसकी पूँछ कितनी थी?'' कुछ बच्चे विश्वास के साथ कह पाए ''एक''। इन सब के बाद अध्यापिका ने कहा कि वह सब बच्चों को छह पूँछ के चूहे से मिलवाने वाली हैं। फिर एक सूत की मोटी सुतली में अखबार की छह एक जैसी लंबी कतरनों को कमर में बांधकर वह एक चूहे का अभिनय करने लगीं।

मन में प्रश्न उठा ''पूँछों के लिए अखबार की कतरन ही क्यों? कक्षा में एक तरफ़ से दूसरी तरफ़

**प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), एन. सी. ई. आर. टी. नयी दिल्ली 110016

''मैं छह पूँछ का चूहा।'' हाँ जी! छह पूँछ का चूहा'' कहते हुए अध्यापिका कक्षा में घूम रही थीं, बच्चों का आनंद देखते ही बनता था। हर बच्चा चूहे को (अध्यापिका) छूने का प्रयास कर रहा था और फिर शुरू हुआ सिलसिला चूहे की पूँछ कम करने का। इसी दौरान समझ में आया कि अखबार की कतरनों से पूँछ बनाने से इस सबमें क्या आसानी हुई। बस एक पूँछ कम करने के लिए एक कतरन को फाड़कर अलग कर देना था। बच्चों से इस पर आपस में चर्चा जारी थी कि एक पूँछ कम होने पर कितनी पूँछ बची रही गई हैं। इस बात का हर बार बच्चे अपने पूर्वज्ञान से अनुमान लगाते और एक बच्चा बची हुई पूँछों को गिनकर उसकी सत्यता का पता लगाता। कक्षा में हर बच्चा किसी न किसी रूप में कहानी से जुड़ा हुआ था। मैं भी बच्चों के साथ मज़े व आनंद से मुग्ध-सा हो गया था। पूरी कहानी का मंचन चलता रहा, जब तक कि चूहे की केवल एक पूँछ बची व अध्यापिका ने एक साधारण एक पूँछ के चूहे की तरह आखिरी बार दौड़ लगाई। बच्चों ने बड़े आनंद के साथ तालियाँ बजाईं। उस अध्यापिका ने चलते समय बताया कि अक्सर वह ऐसा कुछ प्रयत्न कक्षा में करती रहती हैं। ऐसा करने में आनंदित-सा महसूस करती हैं।

जब यह सब एक फ़्लैशबैक में याद आया तो लगा कि क्यों न इसी कहानी से वर्कशॉप के उस सत्र की शुरुआत करें। अपने साथियों से इस विषय में चर्चा की। सहमति के बाद तैयारी शुरू की। अखबार की एक-सी लंबाई की कतरने काटी। एक किनारे कतरनों का लूप बनाया व उसे स्टेपल कर दिया। एक मोटे सूत के धागे को उस लूप में डाल दिया और लो कहानी के मंचन की तैयारी पूरी। अगले दिन, एक साथ अध्यापिका ने छह पूँछ का चूहा बनने के लिए वॉलंटियर बनना स्वीकार किया और हम सब ने इस कहानी को सबसे पहले अध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत करने का फ़ैसला किया। सभी अध्यापकों ने भी इसमें भाग लिया और बहुत सारे डायलॉग ऐसे हुए जो स्वाभाविक व मज़ेदार थे। जैसे ''मैं तो चूहे की पूँछ नहीं काटूँगा, चूहा मेरा दोस्त है।'' वॉलंटियर अध्यापिका, जो चूहे का अभिनय कर रही थीं, कम होने या घटाने की अवधारणा के साथ ही साथ शून्य की अवधारणा से बच्चों को परिचित कराने का प्रयास यह कहकर कर रहीं थीं कि ''मैं तो बिना पूँछ का चूहा।'' इन सभी मुद्दों पर चर्चा भी हुई कि कैसे पात्र अभिनय का उपयोग कक्षा एक और दो में बहुत प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

मुझे दोनों अनुभवों को जोड़ते हुए यह भी लगा कि यदि एक विचार जो एक अध्यापक से शुरू हुआ, इतने सारे लोगों को प्रभावित कर सकता है, उनके सोचने और पढ़ाने के तरीके को बदल सकता है, तो यदि यह विचार प्रत्येक विद्यालय, प्रत्येक शिक्षक तक पहुँचा दिया जाए, तो कितना अच्छा हो! बच्चों को सीखने के नए तरीके प्राप्त होंगे और शिक्षा पद्धति में अभूतपूर्व परिवर्तन हो सकेगा। इन नवीन प्रयोगों के माध्यम से ही विद्यार्थी व शिक्षक का संबंध भी गहरा होगा। बच्चों का विद्यालय जाना बोझ के स्थान पर मौजमस्ती और खेल-कूद का अड्डा हो जाएगा, जहाँ वे खेल-खेल में शिक्षा ग्रहण कर पाएँगे। बेहतर शिक्षक बनने तथा शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने हेतु हमें शिक्षा पद्धति व विद्यालायों में इस प्रकार के प्रयोग करने होंगे!

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 111 5/26/2017 9:27:11 AM